Date – 2 August 2022

South Asia is in a flux. India must show leadership

- दक्षिण एशिया एशिया का दक्षिणी क्षेत्र है, जिसे भौगोलिक और जातीय-सांस्कृतिक दोनों दृष्टियों से परिभाषित किया गया है। इस क्षेत्र में अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका शामिल हैं।
- दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण की भारत की दृष्टि दक्षिण एशिया में अधिक अंतर-क्षेत्रीय व्यापार, निवेश प्रवाह और क्षेत्रीय परिवहन और संचार लिंक पर आधारित है। दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क) और भारत की 'पड़ोसी पहले' नीति इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के दो तरीके हैं।
- हालांकि इस क्षेत्र के देशों के बीच साझा सांस्कृतिक जड़ें हैं, राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता (श्रीलंका संकट और अफगानिस्तान संकट), उच्च मुद्रास्फीति, घटती विदेशी मुद्रा भंडार और घरेलू अशांति जैसी कई उप-क्षेत्रीय चुनौतियां हैं जो कुल को प्रभावित करती हैं। दुनिया की आबादी। लगभग एक चौथाई भूमि को वहन करने वाली इस भूमि के लिए समस्याएँ बनी हुई हैं।

भारत की 'पड़ोस पहले' नीति

- भारत की 'पड़ोसी पहले' नीति 'वसुधैव कुटुम्बकम' के निर्माण के भारत के दृष्टिकोण का प्रतीक है।

विकास सहायता:

- भारत ने पड़ोसी देशों और अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों को विकास सहायता के लिए वर्ष 2022-23 के लिए अपने बजट में 62,920 मिलियन रुपये आवंटित किए हैं।

'वैक्सीन डिप्लोमेसी':

- भारत ने अपनी नेबरहुड फर्स्ट नीति के एक भाग के रूप में अपनी 'वैक्सीन डिप्लोमेसी' या 'वैक्सीन मैत्री' के माध्यम से, COVID-19 महामारी के दौरान दुनिया के कई देशों (विशेषकर पड़ोसी देशों) की सहायता की है।

दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग के मार्ग में चुनौतियाँ

अंतर-क्षेत्रीय व्यापार का निम्न स्तर:

- दक्षिण एशिया का अंतर-क्षेत्रीय व्यापार विश्व स्तर पर सबसे कम है, जो इस क्षेत्र के कुल व्यापार का केवल 5% है। वर्तमान आर्थिक एकीकरण इसकी क्षमता का केवल एक तिहाई है, जिसका अनुमानित वार्षिक अंतराल $23 बिलियन है।

दक्षिण एशिया में बाहरी प्रभाव:

- भारत के छोटे पड़ोसी बाहरी शक्तियों के साथ घनिष्ठ संबंधों के माध्यम से भारत के प्रभाव को संतुलित करने का प्रयास कर रहे हैं। इसी क्रम में अतीत में वे अमेरिका के प्रभाव में रहे हैं और वर्तमान में वे चीन के प्रभाव में हैं।
- दक्षिण एशिया और उसके समुद्री पड़ोस (हिंद महासागर क्षेत्र में द्वीप राष्ट्रों सहित) में हाल की चीनी कार्रवाइयों और नीतियों ने भारत के लिए अपने पड़ोसियों के साथ अपने संबंधों और जुड़ाव को बहुत गंभीरता से लेना आवश्यक बना दिया है।

क्षेत्रीय मुद्दे:

- दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय विवाद क्षेत्र की शांति, स्थिरता और समृद्धि के लिए एक चुनौती बने हुए हैं।
- सभी अंतर-राज्यीय विवादों में से, क्षेत्र और सीमाओं पर चल रहे विवादों से सशस्त्र संघर्ष की संभावना अधिक होती है।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का अक्षम प्रबंधन:

- दक्षिण एशिया का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एकीकरण वैश्विक औसत से कम है और पूर्वी एशिया की तुलना में वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में कम एकीकृत है।
- इस क्षेत्र के कई देशों की कम उत्पादकता के कारण इन देशों का निर्यात बेहद कम है।

दक्षिण एशिया के विकास में भारत की क्या भूमिका हो सकती है?

क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देना:

- भारत क्षेत्रीय व्यापार, संपर्क और निवेश का लाभ उठाकर 'दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार समझौते' को इस क्षेत्र के लिए 'गेम-चेंजर' के रूप में मजबूत कर सकता है।
- आर्थिक ऊर्जा को बढ़ावा देने से अंतर-क्षेत्रीय खाद्य व्यापार में बाधाएं कम होंगी और क्षेत्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं को प्रोत्साहन मिलेगा।

'इको-ब्लूप्रिंट' प्रदान करना:

- जैव विविधता के संरक्षण और जलवायु संकट की प्रतिक्रिया पर ध्यान देने के साथ दक्षिण एशियाई देश भारत के पर्यावरण-ब्लूप्रिंट से लाभ उठा सकते हैं। दक्षिण एशियाई देशों में प्रभावी शासन और सतत विकास के बीच की कड़ी को भी स्वीकार करने की आवश्यकता है।

खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करना:

- क्षेत्रीय खाद्य सुरक्षा एक अन्य क्षेत्र है जिसमें भारत भविष्य को ध्यान में रखते हुए एक बड़ी पहल कर सकता है और खाद्य सुरक्षा के लिए इस आर्थिक ब्लॉक का एक अभिन्न सूत्रधार और घटक बन सकता है।
- इस दृष्टि से सार्क फूड बैंक की क्षमता को बढ़ाना भी आवश्यक है जो वर्तमान में 500,000 मीट्रिक टन से कम है।

उप-क्षेत्रीय पहलों को आगे बढ़ाना:

- भारत बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिम्सटेक) जैसी उप-क्षेत्रीय पहलों की आयोजन क्षमता को बढ़ा सकता है।
- सीमा पार व्यापार, परिवहन और स्वास्थ्य पर विषयवार क्षेत्रीय संवाद आयोजित करके भारत के क्षेत्रीय जुड़ाव को आकार देने में सीमावर्ती क्षेत्र प्रभावी भागीदार हो सकते हैं।

- भारत आवश्यक सहायता प्रदान करके इस क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत कर सकता है और चीन की तुलना में आर्थिक और रणनीतिक दोनों गहराई हासिल कर सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय मंचों में दक्षिण एशिया की आवाज:

- भारत एक समूह के रूप में दक्षिण एशियाई देशों के हितों को बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय मंचों पर दक्षिण एशिया की आवाज बन सकता है। एक सुरक्षित क्षेत्रीय वातावरण भारत को अपने महत्वाकांक्षी विकास लक्ष्यों तक पहुंचने में भी मदद करेगा।

स्वदीप कुमार

अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस

- प्रत्येक वर्ष 29 जुलाई को अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस (ITD) के रूप में मनाया जाता है ताकि धारीदार बिल्ली के संरक्षण को बढ़ावा दिया जा सके और साथ ही इसके प्राकृतिक आवासों की रक्षा के लिए एक वैश्विक प्रणाली की वकालत की जा सके।
- ITD की स्थापना वर्ष 2010 में रूस में सेंट पीटर्सबर्ग टाइगर समिट में जंगली बाघों की घटती संख्या के बारे में जागरूकता बढ़ाने, उन्हें विलुप्त होने से बचाने और बाघ संरक्षण के कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए की गई थी।
- असम में मानस टाइगर रिजर्व में सीमा पार वन्यजीव संरक्षण के वार्षिक वन्यजीव निगरानी परिणामों से पता चला है कि प्रत्येक बाघ के लिए 4 बाघिन हैं।

टाइगर के बारे में मुख्य तथ्य:

- **वैज्ञानिक नाम:** पैंथेरा टाइग्रिस
- **भारतीय उप-प्रजातियां:** पैंथेरा टाइग्रिस टाइग्रिस।

परिचय:

- यह साइबेरियाई समशीतोष्ण वनों से लेकर भारतीय उपमहाद्वीप और सुमात्रा के उपोष्णकटिबंधीय और उष्णकटिबंधीय जंगलों में पाया जाता है।
- यह बिल्ली की सबसे बड़ी प्रजाति है और पैंथेरा जीनस का सदस्य है।
- परंपरागत रूप से बाघों की आठ उप-प्रजातियों को मान्यता दी गई है, जिनमें से तीन विलुप्त हो चुकी हैं।
- **बंगाल टाइगर्स:** भारतीय उपमहाद्वीप
- **कैस्पियन बाघ:** तुर्की के माध्यम से मध्य और पश्चिम एशिया (विलुप्त)
- **अमूर बाघ:** रूस और चीन और उत्तर कोरिया के अमूर नदी क्षेत्र
- **जावन बाघ:** जावा, इंडोनेशिया (विलुप्त)
- **दक्षिण चीन बाघ:** दक्षिण मध्य चीन
- **बाली बाघ:** बाली, इंडोनेशिया (विलुप्त)
- **सुमात्रा बाघ:** सुमात्रा, इंडोनेशिया
- **इंडो-चाइनीज टाइगर:** कॉन्टिनेंटल साउथ-ईस्ट एशिया।

जोखिम:

- आवास विनाश, आवास विखंडन और अवैध शिकार।

संरक्षण स्तर:

- **भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972:** अनुसूची I।
- **प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ (आईयूसीएन) लाल सूची:** लुप्तप्राय।
- **वन्यजीव और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES):** परिशिष्ट I।

भारत में टाइगर रिजर्व

- **कुल संख्या:** 53
- **सबसे बड़ा:** नागार्जुनसागर श्रीशैलम टाइगर रिजर्व, आंध्र प्रदेश
- **सबसे छोटा:** महाराष्ट्र में बोर टाइगर रिजर्व

भारत में बाघों की आबादी की स्थिति

- प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ (आईयूसीएन) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, वर्तमान में दुनिया भर के जंगलों में बाघों की संख्या 3,726 से बढ़कर 5,578 हो गई है।
- भारत, नेपाल, भूटान, रूस और चीन में बाघों की आबादी स्थिर है या बढ़ रही है।
- भारत वैश्विक बाघ आबादी का 70% से अधिक का घर है।
- भारत ने बाघ संरक्षण पर सेंट पीटर्सबर्ग घोषणा के लक्ष्य वर्ष 2022 से 4 साल पहले 2018 में ही बाघों की आबादी को दोगुना करने का लक्ष्य हासिल कर लिया।
- बाघ जनगणना (2018) के अनुसार, भारत में बाघों की संख्या बढ़कर 2,967 हो गई है।

बाघ संरक्षण का महत्व:

- बाघ संरक्षण वनों के संरक्षण का प्रतीक है।
- बाघ एक अनूठा जानवर है जो स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र और इसकी विविधता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- यह खाद्य श्रृंखला के शीर्ष पर भोजन का एक उच्च उपभोक्ता है और जंगली (मुख्य रूप से बड़े स्तनपायी) आबादी को नियंत्रण में रखता है।
- इस तरह बाघ शाकाहारी जानवरों के बीच शिकार और वनस्पति के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद करता है, जिस पर वे भोजन के लिए निर्भर रहते हैं।
- बाघ संरक्षण का उद्देश्य सिर्फ एक सुंदर जानवर को बचाना नहीं है।
- यह सुनिश्चित करने में भी सहायक है कि हम लंबे समय तक जीवित रहें क्योंकि इस सुरक्षा के परिणामस्वरूप हमें स्वच्छ हवा, पानी, परागण, तापमान विनियमन आदि जैसी पारिस्थितिक सेवाएं मिलती हैं।

संबंधित कदम उठाए गए:

प्रोजेक्ट टाइगर 1973:

- यह पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) की एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसे वर्ष 1973 में शुरू किया गया था। यह देश के राष्ट्रीय उद्यानों में बाघों को आश्रय प्रदान करता है।

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण:

- यह MoEFCC के तहत एक वैधानिक निकाय है और टाइगर टास्क फोर्स की सिफारिशों के बाद वर्ष 2005 में स्थापित किया गया था।

संरक्षण का आश्वासन | बाघ मानक (CA|TS):

- **CA|TS** विभिन्न मापदंडों का एक समूह है जो बाघ स्थलों को यह जांचने की अनुमति देता है कि क्या उनके प्रबंधन से बाघों का सफल संरक्षण होगा।

स्वदीप कुमार